गान्गायर गार्या रहमे थे उदमेथे उद्के भयुक्ते सक्विकार गर्द्य रजा रजा रजा द्रा उर्जा प्रक्विंश कर गार्या रुषा र

10910210

116611

निमिष्मित्रेत्त॥नरकारीष्यम्कूमानान्नानीनिविनिष्ययः॥२१॥अनुराधास्मप्रावारं बरालंसम्पोषितः॥देवासुगर्यातं

असु भ

॥२२॥ कालज्ञाकेनुवित्रभोहत्वामर्यःसम्लक्षाञ्च षायाम्बित्मिषंविगतिमिष्माम्बत्।।२३॥म्लेम्लफ्ष्रप्नान्नाम्बो गाण्यत्वापिगतिमिष्टांचग्ब्हति॥२४॥ अथप्वीस्वषाहास्त्रिरिपात्राण्युपाषितः॥कुलन्तेनापसंपनेद्राम्गोवेदपार्गे॥

फबहुगोधने॥उदमेथंससिष्केप्रभूतमधिकाणिते॥२६॥देबान्ससम्बाहासस्वेकामानवाभुयात॥दुभ्तेविभिक्तियोगि मिन्यामनीषिभ्यःस्वरोद्योकेमहीयने॥२७॥श्रवषोकंबलंद्वावस्त्रातिरित्मववा॥भ्वेतेनयातियानेनस्वर्गेलाकानसंबताव

कृत्मार्चनुराच्छारिताभवनितद्वपुरिनतिबासिलधनुः

्राहर हा ा अत्योत्रीय है। या अवस्थित अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति में स्वीति में स्वीति है।

यानी के प्रत्य में बान में में में अपने में ने बान कि प्रोप्त में प्राप्त में बान में प्राप्त में में प्राप्त में में

Digitized by Google